डॉ. हेमन्त लोदवाल - व्याख्यान
16·4-2020 यशोवर्मा के पूर्व की पृष्ठभूमि

① मौखरि शासक अवन्तिवर्मा ने हर्ष साम्राज्य के उत्तर पूर्व जिसमें बिहार का कुछ भाग आता है उस पर अधिकार किया था। लेकिन उसकी राजधानी कन्नौज के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। वर्तमान में अभिलेखीय साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि मौखरियों ने पुनः अधिकार कर लिया था। सुचन्द्रवर्मा की एक मुद्रा मिली है। वह अवंतिवर्मा का पुत्र ग्रहवर्मा का भाई था। इसी प्रकार भोगवर्मा को मौखरिकुल का 'मुकुरमणि' कहा है। उसने नेपाल और मगध के राजकुलों से वैवाहिक सम्बंध स्थापित किये थे। मनोरथवर्मा जो मौखरियों का तीसरा राजा था का अभिलेख वाराणसी जिले के चकिया क्षेत्र के इलिया नामक गाँव से मिला है। जिससे ज्ञात होता है कि कन्नौज और उसके आसपास के क्षेत्र पर शासन किया था। किन्तु उनके तिथिक्रम का पता नहीं चलता है इसके उपरान्त यशोवर्मा के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है जो निम्नानुसार है।

## कन्नौज का यशोवर्मन

7वीं शती के अंत अथवा 8वीं शती के प्रारम्भ में कन्नौज पर यशोवर्मन नामक राजा ने अधिकार किया। जिसका उल्लेख राजकवि वाक्पति के 'गौडवहो' में मिलता है जो प्राकृतभाषा में लिखा है। इसमें गौडराज का यशोवर्मन द्वारा वध का उल्लेख कुछ श्लोकों में मिलता है। यशोवर्मन की अन्य विजयों की बात जरूर मिलती है कवि हमें यशोवर्मन की उपलब्धियों के बारे ज्यादा जानकारी नहीं देता है। कुछ विद्वान तो मानते है कि वाक्पति द्वारा यशोवर्मा की विजयों के वर्णन की भूमिका मात्र है। संभवतः गौडवहो के आधार पर ही आगे जैनों के प्राकृत-संस्कृत काव्यों में यशोवर्मन् की बात की है। जिसमें वप्पभट्टसूरि चरित (13वीं-14वीं शती), राजशेखरकृत - प्रबन्धकोष, प्रभाचन्द्र का प्रभावकचरित -(13वीं-14वीं शती) इनके अतिरिक्त, कल्हण की राजतरंगिणी में यशोवर्मा और कश्मीर के राजा ललितादित्य मुक्तापीड के युद्ध का वर्णन किया है।



Scanned with CamScanner

नालन्दा अभिलेख मे उसके मंत्री को उदीचीपति (उत्तर दिशा का रक्षक, सीमाओ का रक्षक) कहा गया है। ह्वेन-चाओ का कथन है कि यशोवर्मन ने पंजाब के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया था। इससे यह ज्ञात होता है कि पंजाब पर उसकी विजय मगध अभियान के पूर्व सम्पन्न हो चुकी थी।

## ललितादित्य से पराजय

यशोवर्मन ने चीन से भी सम्बन्ध स्थापित किया। चीनी वृतान्तो मे उसे मध्यभारत का शासक कहा गया है उसने अपना दूत बुद्धसेन को 739 ई. मे चीन भेजा था तथा 736 ई. मे कश्मीर शासक ललितादित्य ने भी अपना दूत भेजा था। तब तक यशोवर्मा और ललितादित्य दोनो मित्र थे लेकिन दोनो महत्वाकांक्षी होने से यह मित्रता ज्यादा समय तक नही चली और पंजाब पर अपना अधिकार करने के लिए संघर्ष की स्थिति बनी जो संधि वार्ता में बदल गई और वह विफल होने से दोनो मे युद्ध हुआ उसमे ललितादित्य की विजय हुई जिसमें पंजाब, जालंधर कांगड़ा और पूँछ कश्मीरी राजा के अधिकार मे चला गया।

यशोवर्मा का शासन कब से कब तक था और ललितादित्य का युद्ध कब हुआ था इसके निश्चित प्रमाण नही है। ललितादित्य की जो तिथि कल्हण ने दी है उसे प्रायः 25 वर्ष कम माना जाता है अतः उसका समय 724 ई से 760 ई. तक माना जाता है। कुछ विद्वान ललितादित्य-यशोवर्मा युद्ध का समय 733 ई. मानते है लेकिन 736 ई. में ललितादित्य ने चीन में अपना राजदूत भेजा था, तब तक दोनो में मित्रता थी इससे ज्ञात होता है कि यह युद्ध इसके बाद कभी हुआ होगा। स्मिथ महोदय युद्ध का समय 745 और 740 ई. मानते है। इसी तिथि के बीच जैन ग्रंथ यशोवर्मा की मृत्यु हुई होगी ऐसा मानते है

**मूल्यांकन** - इसी प्रकार यशोवर्मा का जिस तेजी से उत्थान हुआ, उतनी तीव्रता से उसका पतन भी हुआ। उसके बाद कन्नौज का इतिहास कुछ दिनो के लिए अन्धकारमय हो गया।

डॉ. हेमन्त लोदवाल

16.4.2020

यशोवर्मा के इतिहास को जानने में चीनी ग्रंथो से भी सहायता मिलती है
ए-थांग-श्यू एवं सुंग-चि द्वारा संकलित थांग वंश का नवीन इतिहास
(1066)। इसमें यशोवर्मा और कश्मीर के समकालिक राजा
ललितादित्य मुक्तापीड संबंधी उल्लेख मिलता है,

यशोवर्मा की किस राजवंश सम्बंध था यह ज्ञात नहीं
है। गौडवहो में उसे चन्द्रवंशी कहा गया है। जैन ग्रंथो में मौर्य वंश
का कहा गया है। कुछ विद्वान उसे मौखरिकुल का कहते है इसके अतिरिक्त
कोई जानकारी उपलब्ध नहीं होती।

## यशोवर्मा की उपलब्धियाँ

यशोवर्मा ने सोन नदी की घाटी तथा विंध्यपर्वत के से होता
हुआ वह मगध की ओर बढ़ा जिससे मगध का राजा भाग और
वह पकडा गया और मारा गया। इसके बाद यशोवर्मा वंग की ओर
गया जहा वंग के राजा ने उसकी आधिनता स्वीकार की थी।
वहाँ से दक्षिण में मलय पर्वत पर कांचा वहाँ के ~~राजाओं के~~
राजा भी अधिनस्थ हो गया। यशोवर्मा ने पारसीको को परास्त
किया तथा पश्चिमी घाट के क्षेत्रों से कर वसूल किया। इसके
उपरान्त वह मरुदेश - मारवाड़ की ओर गया, ~~जहाँ~~ जहाँ से
थानेश्वर - कुरुक्षेत्र होता हुआ अयोध्या पहुँचा फिर पुनः
विजय पताका फैहराते हुवे कन्नोज लौट गया।

यशोवर्मा की विजयों के बारे में विद्वानो में मतभेद
है। ~~बंगाल~~ दक्षिणापथ में यशोवर्मा ने किन प्रदेशो विजय यात्रा
की और किन राजाओं ने उसकी आधीनता मानी यह स्पष्ट
उल्लेख नहीं मिलता है। किंतु बादामी के चालुक्य अभिलेखो
से ज्ञात होता है कि पुलकेशी के प्रपौत्र विजयादित्य ने अपने पिता
विनयादित्य के समय किसी सकलोत्तरापथनाथ को युद्ध में हराया
यह युद्ध कहाँ हुआ यह ज्ञात नहीं है। साथ ही चालुक्यों ने
यह विजय प्राप्त की था नहीं। संभव हो सकता है कि वह राजा
यशोवर्मा रहा हो। इसी तरह पारसीकों के सम्बंध में कहा
जा सकता है।

Scanned with CamScanner